Quadrant II – Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HGC-102

Paper Title: Aadhunik Hindi Padya

Unit: 01

Module Name: भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित कविता 'नए जमाने की मुकरी'

Module No: 01

Name of the Presenter: Ms. Sweta Sattarkar

Notes :

भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित कविता 'नए जमाने की मुकरी'

मुकरी एक प्रकार की काव्य विधा है। दो सखियों के वार्तालाप स्वरूप एक सखी जो बात कहती है वह इतनी चातुर्यपूर्ण होती है कि उसके दो अर्थ लग जाते हैं। दूसरी सखी पूछती है कि क्या तुम अमुक की चर्चा करती हो, तब पहली सखी मुकर जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र की मुकरियों को नए जमाने की इसलिए कहा जाता है क्योंकि भारतेंदु ने अपने समय के औपनिवेशिक अंग्रेजशासित वक्त का, भारत की दुर्दशा का चित्र खींचा है। इन मुकरियों में उन्होंने अंग्रेजी समय के ग्रेजुएट, अंग्रेजी भाषा, चुंगी, अमला, पुलिस आदि पर व्यंग कसा है।

भारतेंदु अपनी मुकरियों में अंग्रेजों की नस्लीय सोच की कुरूपता को साफ-साफ रेखांकित करते हैं । उनकी मुकरी पढ़ते हुए आज भी उस वक्त की ताजगी साकार हो उठती है। अंग्रेज अपनी नस्ल को हिन्दुस्तानियों से श्रेष्ठ दिखाने का ढोंग करते थे। अपनी भाषा को लेकर उनमें दुराग्रह था। वे अंग्रेजी के ग्रंथों को हिंदी से श्रेष्ठ बताते थे। वे शासक के रूप में दिखाते थे कि उनकी भाषा शासकों की भाषा है और हिन्दुस्तानियों की भाषा गुलामों की। परंतु भारतेंदु मानते थे कि अँग्रेजी ऐसी भाषा है जिसमें कोई तत्व नहीं होता बल्कि सिर्फ झूठी तेजी होती है। अंग्रेजी भाषा अपने मालिकों की तरह केवल अपना मतलब निकालने वाली ऐसी कुटिल और मतलबपरस्त भाषा है जिसमें दिखावा मात्र है।

भारतेंदु की ग्रेजुएट शीर्षक मुकरी बेकारी, बेरोजगारी की दशा में आज भी शिक्षित बेरोजगारों पर पूरी तरह लागू होने की क्षमता रखती है। शिक्षित युवकों की दशा का अंदाजा इस मुकरी से लगाया जा सकता है। युवकों का कृषि के काम में मन नहीं लगना, नौकरी का अभाव होना और नौकरी के अलावा अन्य कोई काम-धंधा करने में अपना अपमान समझना आदि की प्रवृत्ति का बयान वे इस मुकरी में करते है। इसप्रकार भारतेंदु बेकार और झूठी शान में घूमने वाले ग्रेजुएटों पर व्यंग करते है।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा विधवाओं के लिए किए गए कार्यों का वर्णन भी भारतेंदु ने अपनी कविता में किया है। इस मुकरी में वे उन्हें दयानिधान कहकर संबोधित करते हैं ।

भारतेंदु ने केवल अंग्रेजों की आलोचना ही नहीं की है अपितु अंग्रेजों द्वारा किए गए जनहित कार्यों की प्रशंशा भी की है। रेल के भारत में आने पर उसके प्रति लोंगों में जो जिज्ञासा निर्मित थी उसका वर्णन करते हुए रेल व्यवस्था की सुगमता को भी चित्रित किया है। रेल दूर से ही सीटी देकर बुलाती है।

इस मुकरी में भारत में ली जाने वाली चुंगी पर भारतेंदु ने चुटकी ली है। चुंगी का पैसा लेकर भी वह भारत के काम नहीं आ रहा था।

भारतेंदु भ्रष्टाचारी सरकारी सेवकों / अमलों की स्वार्थ वृत्ति का इस मुकरी में पर्दाफाश करते हैं ।

अंग्रेजी राज्य पुलिस राज्य था। पुलिस के आतंक ने साधारण जन-मानस को भयभीत बनाया हुआ था। रिश्वत लेकर कार्य होते थे। भारतेंदु के व्यंग में अंग्रेजी पुलिस व्यवस्था का असली रूप इस मुकरी में दिखाया है।

भारतेंदु ने अंग्रेजों द्वारा किए गए सही कार्यों की भी निरंतर प्रशंसा की है। अखबार, छापाखाना, जहाज जैसे उन्नत कार्यों को सराहा है। जहाज द्वारा भ्रमण, अखबारों द्वारा जनता की जागृति को रेखांकित किया है।

भारतेंदु ने मुकरियों के द्वारा अँग्रेजी कानून की आलोचना की है। क़ानूनों को जनता की सुखसुविधा के लिए लागू किया जाता है-, लेकिन अँग्रेजी राज्य में बात विपरीत थी। हमेशा कोई न कोई नए कानून बनाकर अँग्रेजी सरकार जनता की शक्ति और सामर्थ्य को निर्जीव बना रही थी यह हमें इस मुकरी में स्पष्ट हो रहा है।

अंग्रेज भारतीय राजा महाराजाओं को ख़िताब देते थे। इस ख़िताब के झाँसे में आकर ये लोग राज्य की निधि अंग्रेजों पर लुटाते थे। ऐसे इन ख़िताब पाने वाले चाटुकारों पर भारतेंदु इस मुकरी में व्यंग करते हैं।

अंग्रेजों के आगमन के साथ-साथ समाज में शराब का प्रचालन भी बढ़ा । अतः शराब की बुराई करते हुए भारतेन्दु जनमानस को मदिरा से दूर रहने की हिदायत इस मुकरी के माध्यम से देते हैं ।

भारतेन्दु जी के भाषागत विशेषताओं की बात करें तो काव्य-सृजन में उन्होंने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने आवश्यकतानुसार अरबी, फारसी, उर्दू, अँग्रेजी, आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है । साथ ही उसमें लोकोक्तियां एवं मुहावरों का भलीभांति प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा को सरल, सहज एवं सुबोध बनाने पर विशेष ध्यान दिया जिससे वह जन सामान्य की समझ में आ सके।